किशोरी अमोणकर: मां के स्वर में स्वर

किशोरी अमोणकर

एस. सहाय रंजीत

नई दिल्ली, 27 मार्च 2017, अपडेटेड 16:21 IST

शब्द तो साहित्य है, संगीत स्वर है और स्वर ही मेरी भाषा है. आप शब्दों और लय का इस्तेमाल कर सकते हैं लेकिन आपको याद रखना होगा कि संगीत स्वरों की भाषा है. ज्यादा स्वर लगाने से मिलावट हो जाती है. स्वर विभिन्न एहसासों को दर्शाते हैं. मैं स्वरों की दुनिया से आती हूं." ये गान सरस्वती विदुषी किशोरी अमोणकर के शब्द हैं. ताई भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया की विराट शख्सियत हैं.

एक ऐसे समय में जब एसएमएस से लेकर ट्विटर और फोन तक शब्दों को बहुत ज्यादा खर्च किया जा रहा हो, उनका कहा एक-एक शब्द प्रासंगिक जान पड़ता है. दिल्ली में अरसे बाद, 26 मार्च को वे कमानी सभागार में गाने जा रही हैं. संगीत की दुनिया के लोगों में इसे लेकर खासा रोमांच है. वे दो दिवसीय भीलवाड़ा सुर संगम (25-26 मार्च) में दूसरी शाम मंच पर होंगी. इसी संदर्भ में यह समारोह आपको एक ठहराव देगा—एक ऐसा पल जब हम ठहर कर खुद के भीतर देख सकते हैं. अपने चारों ओर मौजूद आवाजों के बीच हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो हमें शास्त्रीय संगीत की याद दिला सकें. इस लिहाज से उनका यह गायन मील का पत्थर होगा.

उनके गले में जैसे जयपुर-अतरौली घराने की खूबसूरती का वास है. बरसों की साधना और रियाज से उन्होंने अपनी यह विशिष्ट शैली विकसित की है. मुंबई के प्रभादेवी में रहती आ रहीं ताई अपने गायन में अमूमन एक लंबा हिस्सा आलाप को समर्पित करती हैं. और अक्सर उनसे यह कहा भी गया है कि वे गायन का लंबा अंश आलापचारी को समर्पित करें. उनके शब्दों में